|| श्री महाकाली माता चालीसा ||

|| दोहा ||

जय जय सीताराम के मध्यवासिनी अम्ब, देहु दर्श जगदम्ब अब करहु न मातु विलम्ब ॥
जय तारा जय कालिका जय दश विद्या वृन्द, काली चालीसा रचत एक सिद्धि कवि हिन्द ॥
प्रातः काल उठ जो पढ़े दुपहरिया या शाम, दुःख दरिद्रता दूर हों सिद्धि होय सब काम ॥

|| चौपाई ||

जय काली कंकाल मालिनी, जय मंगला महाकपालिनी ॥ रक्तबीज वधकारिणी माता, सदा भक्तन की सुखदाता ॥
शिरो मालिका भूषित अंगे, जय काली जय मद्य मतंगे ॥ हर हृदयारविन्द सुविलासिनी, जय जगदम्बा सकल दुःख नाशिनी ॥ ४ ॥
ह्रीं काली श्रीं महाकाराली, क्रीं कल्याणी दक्षिणाकाली ॥ जय कलावती जय विद्यावति, जय तारासुन्दरी महामति ॥
देहु सुबुद्धि हरहु सब संकट, होहु भक्त के आगे परगट ॥ जय ॐ कारे जय हुंकारे, महाशक्ति जय अपरम्पारे ॥ ८ ॥
कमला कलियुग दर्प विनाशिनी, सदा भक्तजन की भयनाशिनी ॥ अब जगदम्ब न देर लगावहु, दुख दरिद्रता मोर हटावहु ॥
जयति कराल कालिका माता, कालानल समान घुतिगाता ॥ जयशंकरी सुरेशि सनातनि, कोटि सिद्धि कवि मातु पुरातनी ॥ १२ ॥
कपर्दिनी कलि कल्प विमोचनि, जय विकसित नव नलिन विलोचनी ॥ आनन्दा करणी आनन्द निधाना, देहुमातु मोहि निर्मल ज्ञाना ॥
करूणामृत सागरा कृपामयी, होहु दुष्ट जन पर अब निर्दयी ॥ सकल जीव तोहि परम पियारा, सकल विश्व तोरे आधारा ॥ १६ ॥

प्रलय काल में नर्तन कारिणि, जग जननी सब जग की पालिनी ॥ महोदरी माहेश्वरी माया, हिमगिरि सुता विश्व की छाया ॥
स्वछन्द रद मारद धुनि माही, गर्जत तुम्ही और कोउ नाहि ॥ स्फुरति मणिगणाकार प्रताने, तारागण तू व्योम विताने ॥ २० ॥
श्रीधारे सन्तन हितकारिणी, अग्निपाणि अति दुष्ट विदारिणि ॥ धूम्र विलोचनि प्राण विमोचिनी, शुम्भ निशुम्भ मथनि वर लोचनि ॥
सहस भुजी सरोरूह मालिनी, चामुण्डे मरघट की वासिनी ॥ खप्पर मध्य सुशोणित साजी, मारेहु माँ महिषासुर पाजी ॥ २४ ॥
अम्ब अम्बिका चण्ड चण्डिका, सब एके तुम आदि कालिका ॥ अजा एकरूपा बहुरूपा, अकथ चरित्रा शक्ति अनूपा ॥
कलकत्ता के दक्षिण द्वारे, मूरति तोरि महेशि अपारे ॥ कादम्बरी पानरत श्यामा, जय माँतगी काम के धामा ॥ २८ ॥
कमलासन वासिनी कमलायनि, जय श्यामा जय जय श्यामायनि ॥ मातंगी जय जयति प्रकृति हे, जयति भक्ति उर कुमति सुमति हे ॥
कोटि ब्रह्म शिव विष्णु कामदा, जयति अहिंसा धर्म जन्मदा ॥ जलथल नभ मण्डल में व्यापिनी, सौदामिनी मध्य आलापिनि ॥ ३२ ॥
झननन तच्छु मरिरिन नादिनी, जय सरस्वती वीणा वादिनी ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे, कलित कण्ठ शोभित नरमुण्डा ॥
जय ब्रह्माण्ड सिद्धि कवि माता, कामाख्या और काली माता ॥ हिंगलाज विन्ध्याचल वासिनी, अटठहासिनि अरु अघन नाशिनी ॥ ३६ ॥
कितनी स्तुति करूँ अखण्डे, तू ब्रह्माण्डे शक्तिजित चण्डे ॥ करहु कृपा सब पे जगदम्बा, रहहिं निशंक तोर अवलम्बा ॥
चतुर्भुजी काली तुम श्यामा, रूप तुम्हार महा अभिरामा ॥ खड्ग और खप्पर कर सोहत, सुर नर मुनि सबको मन मोहत ॥ ४० ॥
तुम्हारी कृपा पावे जो कोई, रोग शोक नहिं ताकहँ होई ॥ जो यह पाठ करै चालीसा, तापर कृपा करहिं गौरीशा ॥

॥ दोहा ॥

जय कपालिनी जय शिवा, जय जय जय जगदम्ब,
सदा भक्तजन केरि दुःख हरहु, मातु अविलम्ब ॥